REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

मिथिलांचल में पर्यटन की सम्भावनाएँ

बिष्णु कान्त झा
बी० कॉम०, एम० कॉम०,
शोध छात्र , विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग ,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा.

भूमिका :

पर्यटन एक प्रमुख सामाजिक व्यवस्था है। यह आर्थिक विकास का ऐसा क्षेत्र है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यह कम पूंजी तथा श्रम घनिष्ठ उद्योग है, जो अर्थव्यवस्था के गुणक के रूप में अन्य आर्थिक क्षेत्रों को करीब से प्रभावित करता है। कृषि, बागवानी, हस्तशिल्प, परिवहन, निर्माण तथा अन्य और उद्योगों पर इसकी सीधा प्रभाव पड़ता है। रोजगार के अवसर मुहैया करने में पर्यटन उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्रामीण विकास में पर्यटन रणनीति, एक कारगर कदम हो सकता है खासकर के मिथिलांचल का भू–भाग जो आज भी आर्थिक समस्या से जुझ रहा है। गरीबी उन्मूलन एवं रोजगार के नये अवसर, को बढ़ावा देने में पर्यटन विकास एक नया कदम हो सकता है, जो मिथिला के भाग्य और भविष्य के निर्धारण में अनुकूल अवसर प्रदान कर सकेगा। मानव के सतत विकास में पर्यटन को अनदेखा करना श्रेयस्कर नहीं होगा। गरीबी कम करने में, रोजगार बढ़ाने में, अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने में आधारभूत संरचना को नया आयाम देने में पर्यटन एक साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।

पर्यटन शब्द अनेक नामों से जाना जाता है यथा भ्रमण, देशाटन, देशभ्रमण, प्रसिद्ध या मनोरम स्थान की यात्रा, सैर–सपाटा आदि। पर्यटन मनोरंजन हेतु यात्रा करने कि एक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य यात्रा के द्वारा आनन्द प्राप्त करना है। जिसके अंतर्गत पर्यटक पर्यटन स्थल पर अपने अर्जित घन को व्यय करते हैं, दर्शनीय स्थल का भ्रमन करते हैं, शांति की अनुभूति करते हैं तथा अपने दैनिक तनाव से दूर नये माहौल में प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करते हैं। पर्यटन का उद्योग सेवा उद्योग है। अनेक वास्तविक एवं अमूर्त अवयव की प्रधानता इस उद्योग में बनी होती है। इसके वास्तविक तत्व जिसके अंतर्गत, परिवहन व्यवस्था (सड़क, रेल, वायु तथा जल) सत्कार, आवास, भोजन, पेय, पर्यटन, बैंक, बीमा है, एक पर्यटक हेतु महत्वपूर्ण होता है। दूसरी ओर अमूर्त तत्व जैसे आराम और विश्राम, संस्कृति, साहस और अन्य नये नये अनुभूति का भी एक पर्यटक के ऊपर व्यापक प्रभाव पड़ता है। मिथिलांचल में पर्यटन और इससे संबंधित गतिविधियों के विकास के लिए बहुत संभावनायें विद्यमान हैं। प्रो० वरनेकर ने पर्यटन की परिभाषा देते हुये कहा है कि ''पर्यटक के द्वारा महत्वपूर्ण स्थान देखने तथा मन बहलाव के लिए विस्तृत एवं व्यापक भूभाग में किया जाने वाला भ्रमण जिससे मन को शांति मिले तथा आनन्द कि प्राप्ति हो पर्यटन कहलाता है।''

रतनदीप बनर्जी ने पर्यटन की परिभाषा इस प्रकार दिया है कि–''मन बहलाने या किसी अन्य कारण से पर्यटक–स्थलों आदि पर घूमने–फिरने कि प्रक्रिया पर्यटन है।'' सुखद स्मृतियों के साथ अपने स्थान पर लौटने वाला

पर्यटक, मिथिलांचल के पर्यटन का जितना प्रचार करेगा वह बात पर्यटन के दृष्टिकोण से इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। वास्तव में पर्यटन सतत प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत व्यवसाय, धर्म, शिक्षा, संस्कृति, आदि पर्यटन के दायरे में आते हैं। हलाँकि हरेक प्रकार का भ्रमण पर्यटन नहीं कहा जा सकता। एक व्यक्ति किसी शहर में प्रतिदिन आपने कार्य स्थल पर जाता है, इसे पर्यटन नहीं कहा जा सकता है। परन्तु व्यक्ति यदि सप्ताह के अंत में अपने बच्चों तथा परिवार के साथ शहर के अजायबघर या चिड़ियाघर जाता है तो यह कार्य पर्यटन की श्रेणी में आता है। यहाँ तक कि यदि कोई ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण हेतु अपने सामान्य जगह से दूर जाता है तो इसे पर्यटन नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यहाँ होने वाले स्थान में परिवर्तन मनोरंजन हेतु नहीं किया जाता है। पर्यटन पद को इस प्रकार परिभाषित करते हुये किया जा सकता है – पर्यटक ऐसा व्यक्ति होता है जो अपने व्यक्तिगत स्थान से अलग किसी होटल या विश्राम गृह में एक दिन और एक रात से अधिक, निम्न सुख, खुशी, छुट्टी, मनोरंजन भ्रमण, अध्ययन, स्वास्थय, हेतु ठहरता रहता है, पर्यटन कहलाता है। वस्तुतः पर्यटन किसी व्यक्ति के इच्छा की वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत वह अपने घर से दूर अल्प समय के लिए वास करता है।

पर्यटन कई प्रकार के होते है। जिनमें प्रमुख निम्न हैं –

- आनन्ददायक पर्यटन
- फुर्सत के अनुसार पर्यटन
- अभिराम पर्यटन
- सांस्कृतिक पर्यटन
- धार्मिक पर्यटन
- स्वास्थय पर्यटन
- खेल पर्यटन
- साहसिक पर्यटन
- पेशेवर पर्यटन
- प्रेरक पर्यटन

पर्यटन एक पूर्ण उद्योग के रूप में विकसित होता जा रहा है। यह सेवा का आधारित उद्योग है, क्योंकि यह केवल उत्पाद को ही नहीं उपलब्ध कराता है अपितु यह अनेकों प्रकार की सेवा अनेकों प्रकार के लोगों को उपलब्ध कराता है। मिथिलांचल के दरभंगा प्रमंडल के क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाऐं मौजूद है। इस उद्योग के फलने–फूलने से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सकेगा। मिथिलांचल के पर्यटन का वर्तमान स्वरूप में देर–सवेर परिवर्तन होना तय है। इसके सुनहरे भविष्य की कल्पना किया जा सकता है, जिससे स्थानीय निवासियों की आय में वृद्धि हो सकेगी, जीवन स्तर में सुधार आयेगा और आर्थिक विषमता दूर होगी। इसके लिए जन जागरूकता, मीडिया जागरूकता की आवश्यकता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार को बढ़ते पहल भी इस दिशा में स्वागत योग्य है, जो मिथिला में पर्यटन के विकास को नया आयाम दे सकेगा।

मिथिलांचल का क्षेत्र प्रारंभ से ही गौरवशाली रहा है। मिथिला जनक नन्दनी सीता की जन्म स्थली है। यहाँ न सिर्फ राम बल्कि सतयुग, त्रेता, द्वापर युग के अनेक धर्म स्थली भी है। मिथिला के अक्षय ज्ञान भंडार से जगद्गुरू शंकराचार्य एवं कविश्रेष्ठ कालिदास भी ज्ञान प्राप्त कर ख्याति प्राप्त किये हैं। मिथिला के इस अनुपम सीमा क्षेत्र में अनेकों दार्शनिक, तीर्थ स्थल एवं पर्यटन केन्द्र है। मिथिला महाकवि विद्यापति, मंडन मिश्र, भारती, वाचस्पति मिश्र, कालिदास, घाघ, जट, जैसे अनेको प्रकार के विद्वानों एवं कवियों का कर्म क्षेत्र है।

मिथिला (दरभंगा प्रमंडल) अपने धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के पर्यटन स्थलों तथा परम्परागत महोत्सवों तथा कलाओं की वजह से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकता है। यहाँ के अन्य पक्षों की तरह सांस्कृतिक पक्ष भी गौरवशाली है। यहाँ के सांस्कृतिक धरोहरों में सामा–चकेबा, जट–जटिन, झरणी, झिंझिया, झिम्मरी आदि प्रमुख है। यहाँ के लोगों को चटाई, दौरी, मिट्टी के बर्तन एवं मुर्तियों सहित अन्य कलात्मक कृतियों को बनाने का भी अनोखा अंदाज है। अतः इस क्षेत्र को सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। यहाँ का मिथिला पेंटिग विश्व–विख्यात है। मिथिला पेंटिग में सीतादेवी राँटी,

जीतवारपुर सहित कई महिलाओं को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। मिथिला पेंटिंग कपड़ा और अरिपन (भिति चित्र) दोनो प्रकार का होता है, जो काफी महत्वपूर्ण है। अतएव इस धरोहरों का पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करना पर्यटन प्रबंध एवं बिहार सरकार का अहम दायित्व है, क्योंकि मिथिला को पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित कर आर्थिक रूप से पिछड़ा बिहार को समृद्ध बनाया जा सकता है।

मिथिला (दरभंगा प्रमंडल) क्षेत्र में पर्यटनीय विकास की व्यापक संभावनाऐं है। बिहार सरकार मिथिलांचल के पर्यटन क्षेत्र के विकास पर भी ध्यान दे रही है लेकिन इसकी रफ्तार काफी धीमी है। तथा पर्यटन उद्योग की दृष्टि से समुचित नहीं है।

- **पर्यटकों का आकर्षण :**

भारत में विदेशी पर्यटकों के आने का क्रम जो मेगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग आदि के साथ शुरू हुआ था वह निर्बाध गति से आज भी जारी है। विदेशियों के बीच भारत कौतुहल पैदा करता रहा है। भारत में सबसे ज्यादा पर्यटक अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस और श्रीलंका से आते हैं। एक सरकारी अनुमान के मुताबिक, कुल विदेषी पर्यटकों में 16 फीसदी अमेरिका से और 12.6 फिसदी ब्रिटेन से होते हैं। पर्यटन मंत्रालय के वेबसाईट इनक्रेडिबल इंडिया के अनुसार विदेशी पर्यटकों में से सबसे पसंदीदा पांच स्थानों आगरा, गोवा, केरल, वाराणसी, दिल्ली और कश्मीर है। माना जाता है कि पर्यटक कुछ खास स्थलों को ही देखने के लिए यहां आतें हैं जो प्रकृति सौन्दर्य अथवा प्राचीन धरोहरों से संबंधित हैं। इस लिहाज से मिथिला अनन्य प्राकृतिक धरोहरों एवं प्रकृति सौंदर्य से परिपूर्ण है। जानकारों का मानना है कि अमेरिकियों के लिए कोई खास शहर या स्थान अहमियत नहीं रखता तथा बड़ी संख्या में पर्यटक भारत के कुछ शहरों तक ही अपनी सफर को सीमित रखते हैं।

ऐसी स्थिति में मिथिला में दरभंगा प्रमंडल के पर्यटन केन्द्रो को स्तरानुरूप विकसित कर तथा आधारभूत संरचनाओं को सुदृढ़ कर इन विदेशी पर्यटकों को मिथिला की तरफ आने के लिए लालायित किया जा सकता है। जिससे न केवल मिथिला व बिहार बल्कि उत्तरी भारत में विदेशी मुद्रा अर्जन करने का एक कारगर उद्योग स्थापित किया जा सकता है। मिथिला में त्रेता, द्वापर तथा वर्तमान युग के अनेक सांस्कृतिक व आध्यात्मिक केन्द्र अपनी गौरवशाली परम्परा के साथ मौजूद हैं। मिथिला पेंटिग्स न केवल देश बल्कि विदेश में भी अपनी पहचान बनाकर लोगों को अपनी तरफ आकृष्ट करने में सफल है जो कि मिथिला की अनुपम देन है। विदेशियों में मिथिला पेंटिग्स सीखने की उच्च जिज्ञासा मौजुद है। यहाँ मिथिला पेंटिग्स प्रशिक्षण संस्थान को बढ़ावा देकर तथा उचित संरक्षण व सुविधा देकर इसमें सफलता पायी जा सकती है।

भारत आने वाले पर्यटकों में प्रवासी भारतीयों का आंकड़ा भी ज्यादा है। सर्दियों में भारत आने वाले पर्यटक गोल्डन ट्राइएंगल रूट यानि दिल्ली, आगरा, जयपूर की सैर जरूर करना चाहतें हैं। ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस आदि से पर्यटक इस मौसम मे इसलिए ज्यादा आतें हैं क्योंकि यह मौसम इनके लिए उपयुक्त होता है। [2]

सूचना क्रांति के इस युग में लोग जीवन में सुख शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं। लोगों के जीवन स्तर में सुधार, वैश्विक गाँव तथा संचार तंत्र की एक सूत्रता के कारण भाग–दौड़ भरी जिंदगी में सुखशांति आनन्द एवं संस्कृति का विकेन्द्रीकरण, व्यक्ति की विलासिता पूर्ण अभिलाषा, बढ़ती आय का उपयोग आदि के लिए पर्यटन जीवन का एक आवश्यक अंग बनता जा रहा है।

14 नवम्बर 2000 ई० को बिहार झारखंड बँटवारा के बाद बिहार की खनिज संपदा से युक्त क्षेत्र झारखंड के हिस्से में चला गया है। बिहार के दक्षिण भाग बौद्ध क्षेत्र बोध गया, राजगीर, नालंदा, अरेराज, वैशाली, में बौद्ध पर्यटकों का आना लगातार जारी है। हालांकि बौद्ध धर्म का बिहार से बेहद पुराना रिश्ता है लेकिन मिथिला क्षेत्र के इस अनुपम पर्यटन संसाधनों को पर्यटन उद्योग के रूप में सरलता से विकसित कर राष्ट्र व क्षेत्र को विकसित बनाने का एहसास बहुत देर से हुआ है। मिथिलांचल (दरभंगा प्रमंडल) के पर्यटनीय संसाधनों को विकसित कर दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। बिहार के दक्षिण भागों की तरह मिथिला में भी पर्यटन उद्योग की असीम संभावनाऐं है।

बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के फलस्वरूप बिहार में विश्व–व्यापी मंदी के बावजूद भी देशी एवं विदशी पर्यटकों की संख्या में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है। भारत की बहुसांस्कृतिक और बहुपारंपरिक समाज विन्यास तथा यहाँ की उच्च स्तरीय वास्तु विरासत के चलते यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में विदशी पर्यटक आते हैं। ऐसे में पर्यटन विभाग को इसके लिए खासा

इंतजाम करना पड़ता है। ताकि ज्यादा से ज्यादा विदेशी सैलानी यहाँ आ सकें। वर्ष 2014–2015 के बजट में टूरिज्म सेक्टर को लेकर कई घोषणाऐं हुई हैं। इन घोषणाओं को देखकर लगता है कि टूरिज्म सेक्टर के अच्छे दिनों की शुरूआत हो रही है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1000 करोड़ रुपये से अधिक के प्रस्ताव के साथ–साथ सारनाथ, गया, वाराणसी, बौद्ध सर्किट का विकास, देश के नौ हवाई अड्डों पर ई–वीजा की सुविधा, ''ह्रदय'' और ''प्रसाद'' जैसी योजनाओं की शुरूआत हो रही है। [3]

घरेलु स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काफी कुछ प्रयास हो रहे हैं। मिथिलांचल के पर्यटन केन्द्र अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं उच्च स्तरीय वास्तु शिल्प विरासत से पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। राज्य सरकार द्वारा भी विभिन्न पर्यटनीय स्थानों के साथ साथ मिथिला के पर्यटन केन्द्रों को विकसित करने के लिए तत्पर हैं। वर्ष 2016–17 में 38 पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण पर 162.06 करोड़ रुपये खर्च घोषित रहा है। पर्यटन विभाग द्वारा नालंदा, गया, जहानाबाद, पटना, वैशाली, सारण, नवादा, बोधगया, समस्तीपुर, मधुबनी, कटिहार, बाँका और आरा के 38 पर्यटक स्थलों के सौंदर्यीकरण का काम शुरू हुआ है।[4] देशी–विदेशी पर्यटक बिहार आते ही बोधगया और वैशाली, नालंदा घूमना पसंद करते हैं। पर्यटन विभाग ने तीनो जिलों के पर्यटन स्थालों के सौंदर्यीकरण व विकास का काम कराने को अपनी प्राथमिकता सूची में रखा है।

पर्यटन के लिहाज से किए जा रहे विकास कार्य के अंतर्गत वर्ष 2015–16 में मधुबनी के उच्चैठ काली स्थान में पर्यटकीय विकास के लिए 211.96 लाख तथा उगना महादेव मंदिर के पर्यटकीय सुविधा के काम के लिए 100.01 लाख रुपये आवंटित किए गए है। समस्तीपुर के विद्यापति धाम के विकास कार्य के लिए 114.01 लाख रुपये आवंटित किए गए हैं।[5] इससे परिलक्षित होता है कि पर्यटन के बढ़ते हुए कदम को देखते हुए मिथिलांचल के सांस्कृतिक, विकास को समुचित पर्यटनीय सुविधा देकर पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। यहाँ की तैयार व उन्नत सांस्कृतिक व वास्तु विरासत को लेकर बिहार के अन्य भागों तथा देश के सांस्कृतिक प्राकृतिक व आध्यात्मिक रूचि रखने वालो पर्यटकों को आसानी से मिथिलांचल के तरफ मोड़कर यहाँ की जीवन रेखा को बढ़ाया जा सकता है।

• मिथिलांचल में (दरभंगा प्रमंडल) पर्यटन की सम्भावनाएँ :

मिथिलांचल पर्यटन के क्षेत्र में सन् 1950 से लगातार विकास कर रहा है। अध्यात्मिक आभा से परिपूर्ण मिथिला सदियों से प्रेरणा स्त्रोत रहा है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक मंदिर, मस्जिद एवं विद्वता के लिए जाना जाता है। प्रतिवर्ष अच्छी संख्या में पयर्टक यहाँ आते रहें है। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1981 में बिहार में बिहार स्टेट टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन का गठन किया गया। पिछले 38 वर्षों से इस कॉरपोरेशन का क्रियाकलाप उत्तम रहा है। बीते दशक में पर्यटन के दृश्य में भारी परिवर्तन हुआ है। स्टेट पर्यटन नीति 2002 ने बिहार में पर्यटन को काफी बढ़ावा दिया है। मिथिलांचल साहसिक पर्यटन तथा इको–पर्यटन हेतु आर्दश स्थल रहा है। यह स्थान कलरव करती नदियाँ, जातीय संस्कृति, ऐतिहासिक धरोंहरों तथा मंदिरों का केन्द्र रहा है। असीमित भौतिक संसाधन, प्राकृतिक सौन्दर्य, बड़ी श्रमशक्ति, किला, महलों, नदियों, पावन मंदिरों, कला, इतिहास तथा उन्नत संस्कृति से परिपूर्ण मिथिलांचल पर्यटन का केन्द्र बन सकता है तथा अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। मिथिला पेंटिंग यहाँ की पुरातन धरोहर है। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण मिथिला का यह क्षेत्र उपजाऊ भूमि तथा मानव संसाधन से परिपूर्ण है। यहाँ अनेकों नदियों का संगम है, जो पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। पर्यटन किसी भी राष्ट्र को आर्थिक विकास का प्रभावी क्षेत्र रहा है। यह अल्पपूँजी वाला काम घनिष्ठ उद्योग है। जिसका आर्थिक गुणक प्रभाव होता है तथा वो क्षमता होती है जो अन्य आर्थिक क्षेत्र को जैसे कृषि, बागवानी, हस्तशिल्प, परिवहन, निर्माण तथा अन्य दूसरे क्षेत्रों का प्रोत्साहन दे सकता है। मैथिली, मिथिलांचल की एक मात्र भाषा है, जिसकी अपनी लिपि है। मिथिला की अघोषित राजधानी दरभंगा है। बिहार में मिथिलांचल का पर्यटन केन्द्र अग्रणी उद्योग के रूप में उभरने की क्षमता रखता हैं। एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मिथिलांचल स्मारकों और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के संदर्भ में रणनीतिक लाभ रखता है। दरभंगा प्रमंडल के पर्यटक स्थलों में दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता है, जिन्हें संस्कृति, छुट्टी, अध्ययन और ऐतिहासिकता में विशेष रूचि है। बिहार राज्य के मिथिलांचल में एक बहुत ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जो दर्शनीय है। दरभंगा और राजनगर (मधुबनी) के बड़े तालाबों के साथ–साथ महाराज और उनके परिजनों द्वारा खोदे गए तालाब तथा कुशेश्वरस्थान, उच्चैठ, बाणेश्वरी, नवादा, मंगरौनी, भवानीपुर के प्रसिद्ध मंदिरों जैसे पर्यटन

स्थलों के साथ मिथिलांचल का पूरा हिस्सा पर्यटन के धरोहरों से भरा हुआ है। बिदेश्वरस्थान,कपिलेश्वरस्थान, उगनेश्वरस्थान, मिथिला शोध केंद्र, मखाना अनुसंधान संस्थान, मत्स्य शिक्षा संस्थान जैसे शैक्षिक संस्थान प्रसिद्ध है। दलसिंहसराय (जिला समस्तीपुर) जो कमला नदी के तट पर स्थित है, दरभंगा शहर बागमती नदी के तट पर स्थित है। समस्तीपुर बुढ़ी गंडक नदी के तट पर स्थित है। मोहीउद्दीनगर (जिला–समस्तीपुर) गंगा के किनारे और भीमनगर, कोशी नदी के तट पर स्थित है। ये सभी तेजी से विकसित होने की अपार क्षमताओं वाले शहरों का स्थान रखते हैं। इन स्थानों के आकर्षण को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जा सकता है। प्राकृतिक सौंदर्य, स्थानीय परिवेश, सुंदर तालाब, देशी–विदेशी पक्षी, मिथिला पेंटिग, खादी के कपड़े, मेला, त्यौहारों, सांस्कृतिक विरासत, तथा अनेकानेक धरोहरों से परिपूर्ण मिथिलांचल देशी और विदेशी पर्यटको का ध्यान अपनी आरे खींच लेता है।

• मिथिलांचल के पर्यटन केन्द्र :

मिथिला के इस पावन क्षेत्र में अनेकों पर्यटक स्थल मौजूद हैं। इनमें वर्तमान बिहार के बाबाधाम के नाम से प्रसिद्ध कुशेश्वर स्थान तथा कपिलेश्वर स्थान, उग्नेश्वर स्थान (उगना महादेव), विदेश्वर स्थान आदि प्रमुख हैं।

मिथिला अंतर्गत दरभंगा प्रमंडल के संभावित पर्यटन केन्द्रों में कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नांकित हैं –

1. नव्य न्याय व दर्शनशास्त्र के मूर्द्धन्य विद्वान व प्रणेता गौतम मुनि का आश्रम तथा गौतम कुंड, कमतौल, दरभंगा।
2. गौतम मुनि के श्राप से श्रापित भगवान श्रीराम, लक्ष्मण एवं गुरू वशिष्ट के जनकपुर जाने के क्रम में पत्थर (शिला) बनी अहिल्या का उद्धार स्थल अहिल्या स्थान, दरभंगा।
3. 450 वर्ष पूर्व दरभंगा महराज ''श्री जंग बहादुर सिंह'' व ''श्री रूद्र बहादूर सिंह'' द्वारा स्थापत्य कला का अदभूत नमूना श्रीराम जानकी मंदिर अहिल्या स्थान, कमतौल, दरभंगा।
4. कालिदास को भगवती द्वारा प्राप्त वरदान स्थल उच्चैठ धाम, बेनीपट्टी, मधुबनी।
5. कालिदास का गुरूकुल आश्रम कालिदास डीह, बेनीपट्टी, मधुबनी।
6. राजा बलि का गढ़ बलिराज गढ़, बाबु बरही, मधुबनी।
7. महाकवि विद्यापति का जन्म स्थल विद्यापति डीह, बिस्फी, मधुबनी।
8. जगत जननी जनक दुलारी सीता का पुष्प वाटिका फुलवरिया।
9. महर्षि याज्ञवल्लक्य आश्रम स्थल।
10. महर्षि श्रृंगि व भृंगू ऋषि का तप स्थल।
11. भगवान शिव द्वारा उगना के रूप में नौकरी पश्चात विद्यापति की पत्नी सुधीरा के क्रोध से दंडित होने एवं एवं अपना रहस्य खुल जाने पर शिवलोक पधारने वाले भगवान शिव का मंदिर स्थल उग्रनाथ महादेव मंदिर, उगना स्थान, पंडौल, मधुबनी।
12. त्रेता युगीन कपिल मुनी का आश्रम स्थल व शिव का महान सिद्धत्व महादेव मंदिर, कपिलेश्वर स्थान, मधुबनी।
13. वर्तमान बिहार के बाबाधाम के नाम से प्रसिद्ध प्राचीन शिवनगरी व लव–कुश का जन्म स्थान कुशेश्वर स्थान, बिरौल, दरभंगा।
14. बिदेश्वर स्थान शिव मंदिर, मधुबनी।
15. मिथिला की प्रसिद्ध विवाह संस्कार स्थल सौराठ सभा गाछी।
16. मंडन मिश्र व भारती का स्थल।
17. अयाची मिश्र का डीह सरिसवपाही, मधुबनी।
18. अयाची मिश्र पोखर (चमैंनिया पोखर)
19. खजौली भगवती मंदिर।
20. नवादा भगवती मंदिर।

21. हावीडीह भगवती मंदिर।
22. उत्तर भारत के कुरूक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध प्राचीन सामंती जमीन्दार हड़वा–बड़वा व पहलवान न्याय प्रिय लोरिक का युद्ध स्थल, नरसर चर, बनडिहुली, बहेड़ी (दरभंगा)
23. माता सती का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर सती स्थान पड़री, बिरौल, दरभंगा।
24. त्रेतायुगीन प्राचीन द्रव्येश्वरनाथ शिव मंदिर देवकुलीधाम, बिरौल, दरभंगा।
25. जीवछ एवं कमला नदी का संगम स्थल त्रिमुहानी घाट, दरभंगा।
26. जीवछ घाट और गौसाघाट स्नान स्थल (इन स्थलों पर माघ पुर्णिमा को पुत्र प्राप्ति की इच्छा से स्नान किया जाता है।)
27. भामा साह का मजार, दरभंगा।
28. महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह की चिता पर बना विशाल प्राचीन, सिंद्ध, माँ श्यामा मंदिर, दरभंगा।
29. महाराजा के महल में संचालित ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
30. प्राचीन किला में बिहार का एकमात्र सुप्रसिद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा।
31. महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा।
32. चंद्रधारी संग्रहालय, दरभंगा।
33. होली रोजरी चर्च, दरभंगा।
34. मकदुम बाबा मजार दरभंगा।
35. महाराजा का किला दरभंगा।
36. इन्द्रभवन, दरभंगा।
37. कंकाली मंदिर, दरभंगा।
38. मनोकामना मंदिर दरभंगा।
39. महाराजा का नगर राजनगर जिसमें अनेकों महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल व महत्वपूर्ण मंदिरें दर्शनीय हैं, राजनगर, मधुबनी।
40. संस्कृत विद्वान उदयनाचार्य का डीह करियन रोसड़ा, समस्तीपुर एवं विद्यापति धाम, समस्तीपुर।
41. मिथिला के सांस्कृतिक गतिविधियाँ सामा–चकेबा, जट–जटिन, झिंझिया, झिम्मरी, झरनी इत्यादि।
42. डोकहर की राज राजेश्वरी मधुबनी।
43. मंगरौनी के शिव शक्ति स्थल मधुबनी।
44. गिरिजा स्थान, मधुबनी।
45. गांडिवेश्वर शिवधाम, मधुबनी।
46. कृष्णेश्वर शिवधाम, मधुबनी।
47. परसा सूर्यधाम, मधुबनी।
48. शिव व काली स्थान, मधुबनी।
49. लक्ष्मीनाथ गोंसाईकुटी, मधुबनी।
50. पारसमणि शिव, काली मंदिर।
51. भौआरा गढ़, मधुबनी।
52. भीठ भगवानपुर।
53. विशेश्वरी भगवती मधुबनी जिला।
54. खुदनेश्वर स्थान समस्तीपुर जिला।
55. पांडव डीह, समस्तीपुर।
56. उगना महादेव स्थान समस्तीपुर।
57. मांगुर गढ़, समस्तीपुर।
58. सिवैसिंगपुर यानि गढ़ सिसई।
59. भासिंगपुर का ग्वालगढ़ समस्तीपुर जिला।
60. मिथिला पेंटिग्स।
61. मिथिला माटी कला हस्तशिल्प इत्यादि।

निष्कर्ष

आज विश्व के धरातल पर पर्यटन उद्योग विदेशी मुद्रा अर्जन एवं रोजगार की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। मिथिला अपने धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के पर्यटन स्थलों तथा परम्परागत महोत्सवों तथा कलाओं की वजह से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकता है। यहाँ के अन्य पक्षों की तरह सांस्कृतिक पक्ष भी गौरवशाली है। यहाँ के सांस्कृतिक धरोहरों में सामा–चकेबा, जट–जटिन, झरणी, झिंझिया, झिम्मरी आदि प्रमुख है। यहाँ के लोगों को चटाई, दौरी, मिट्टी के बर्तन एवं मुर्तियों सहित अन्य कलात्मक कृतियों को बनाने का भी अनोखा अंदाज है। अतः इस क्षेत्र को सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। यहाँ का मिथिला पेंटिग विश्व–विख्यात है। मिथिला पेंटिंग में सीतादेवी राँटी, जीतवारपुर सहित कई महिलाओं को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। मिथिला पेंटिंग कपड़ा और अरिपन (भिति चित्र) दोनों प्रकार का होता है, जो काफी महत्वपूर्ण हैं।

अतएव इस धरोहरों के पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करना पर्यटन प्रबंध एवं बिहार सरकार का अहम दायित्व है, क्योंकि मिथिला को पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित कर आर्थिक रूप से पिछड़ा बिहार को समृद्ध बनाया जा सकता है।

संदर्भ स्त्रोत :

1. बनर्जी, रतनदीप (2015), भारतीय पर्यटन हेतु प्रवाहकार्य प्राइमर, योजना, पृष्ठ–20–21
2. प्रभात खबर, 15 जुलाई 2013, पृष्ठ सं० – 11 (भारत में पर्यटन)
3. ''भारत का विकासोन्मुख पर्यटन'' दैनिक जागरण 27 वीं जुलाई 2014, पृष्ठ सं० – यात्रा
4. प्रभात खबर, मुजफ्फरपुर, 21वीं जुलाई 2015, पृष्ठ संख्या – 09
5. पर्यटन विभाग, बिहार सरकार वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16, पृष्ठ सं० 08
6. दीक्षित, पी० एन०, (2005), वैश्विकरण के दौर में पर्यटन की समस्याः आशिष प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–210
7. बहुगुणा, क०, (2006), भारत में पर्यटनः नीति एवं सम्भावना, आरूषी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ० 194–196
8. सिंह, रा०, (2006), भारत में ग्रमीण पर्यटन, योजना, Vol-54, पृ०–72
9. सारथी, एल०, (2006), ग्रामीण पर्यटन में रोजगार के अवसर, कुरूक्षेत्र, पृ०–53
10. शिवकुमार, रा०, (2007), भारत में पर्यटन की सम्भावना, भारतीय अर्थव्यवस्था Vol.2, पृ०–43
11. चंदा, वि० मा०, (2008), पर्यटनः पुरानी समस्या तथा नई आशा, आर्दश प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–144
12. राणा, जे०, (2008), भारत में ग्रामीण पर्यटनः क्षेत्र एवं क्षमता, कुरूक्षेत्र पृ०–72
13. मिश्रा, के०, (2011), भारत में ग्रामीण पर्यटन, योजना, पृ०–42
14. बत्रा, रा०, (2016), ग्रामीण पर्यटनः आधारभूत संरचना, योजना पृ०–33
15. बिजू, पी०, (2016), भारत में पर्यटनः इतिहास एवं विकास, स्टालिंग प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–146–147